|  |
| --- |
| 19. Januar 2025 |
| **02. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Jes 62,1-5; Zweite Lesung: 1 Kor 12,4-11; Evangelium: Joh 2,1-11 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 400, 1+2 | Ich lobe meinen Gott |
| Kyrie: | GL 160 | Gott des Vaters ewger Sohn |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 96, 1-4.6-7.10 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 54, 1 | Singt dem Herrn, alle Länder |
|  | GL 35, 1 | Ein Tag sagt es jubelnd |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 551, 1+2 | Nun singt ein neues Lied dem Herren |
|  | Wenn nur die 2. Lesung genommen wird: |
|  | GL 483, 1+3 | Halleluja. Ihr seid das Volk |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Durch das Evangelium hat Gott uns berufen* |
|  | *zur Herrlichkeit Jesu Christi, unseres Herrn.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 793 | Dich, o Gott, wir Vater nennen |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 477, 1+3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  | GL 146, 1-4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | 710, 1-3 | Unser Leben sei ein Fest |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 216, (2+3!) | Im Frieden dein |
|  | GL 409, 1+3 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 357, 1+6 | Wie schön leuchtet der Morgenstern |
|  | GL 372, 1-3 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  | GL 630, 2 | Das Heil und die Herrlichkeit |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 382, 1+4 | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 389, 1-4 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |
|  | GL 536, 5+6 | O mächtige Fürsprecherin |